पूसा बासमती की उन्नत प्रजातियॉ एवं वैज्ञानिक खेती पर कार्यशाला और धान का बीज तथा कृषि यन्त्र वितरण कार्यक्रम

बरेलीः फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के अंतर्गत खरीफ अभियान और विश्व पर्यावरण सप्ताह के अवसर पर पूसा बासमती धान की उन्नत प्रजातियां तथा उनके वैज्ञानिक खेती पर कार्यशाला एंव बीज और कृषि यंत्र वितरण कार्यक्रम दिनांक 3 जून से 7 जून, 2024 तक पशु अनुवंशिकी विभाग में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में प्रथम और द्वितीय चरण के लगभग 15 गांवों के 154 किसानों तथा 50 किसानों ने वर्चुल माध्यम से अपनी भागीदारी की।

इस कार्यशाला में पूसा बासमती धान के जनक तथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने धान की सीधी बिजाई के तीन मुख्य लाभ किसानों को बताये जिसमें 30 से 35 प्रतिशत पानी की बचत, धान रोपाई पर ₹4000 से 4500 रुपए प्रति एकड़ बचत तथा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली ग्रीन हाउस गैस की उत्सर्जन में 30 से 35 प्रतिशत की कमी होती है। जब इस विधि से इतने फायदे हैं तब किसानों इस विधि को क्यों नहीं अपनाया था क्योंकि इस विधि में खरपतवार बहुतायत में हो जाते हैं जिनका नियंत्रण करना बहुत महंगा तथा मुश्किल हो जाता है किसानों की इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा नई दिल्ली के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह और इनकी वैज्ञानिकों की टीम ने इस वर्ष पूसा बासमती–1509 और पूसा बासमती–1121 में सुधार करके भारत वर्ष की पहली खरपतवार सहनशील दो प्रजातियां पूसा बासमती–1985 और पूसा बासमती–1979 विकसित की है।

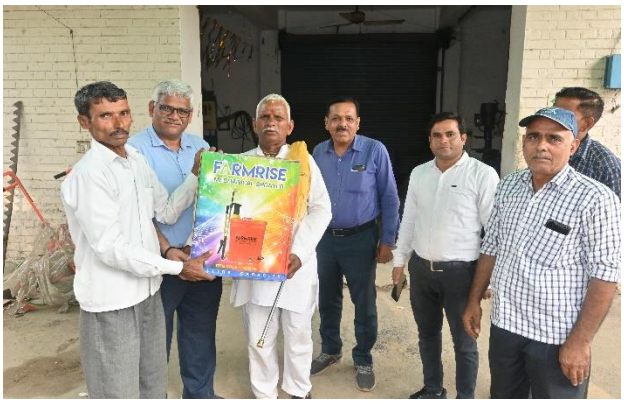

इन दोनों प्रजातियों की सीधी बिजाई 15 जून से 20 जून तक की जा सकती है इन प्रजातियों का बीज भारतीय कृषि अनुसंधान सस्थान, पूसा, नई दिल्ली में भरपूर मात्रा में उपलब्ध है। एक एकड़ में सीधी बिजाई विधि से 8 किलोग्राम बीज लगता है इसके अलावा डॉ. सिंह ने अन्य पूसा बासमती की उन्नत प्रजातियां जैसे पूसा बासमती–1847, 1885 और 1886 को झुलसा और झौका बीमारियों से प्रतिरोधी क्षमता के बारे में बताया।तथा किसानों को अल्प अवधि की पूसा बासमती–1847 की प्रजाति की नर्सरी 20 जून को लगाये तथा जब पौध 21 से 25 दिन के बीच की हो जाय तब रोपाई कर दें पशु अनुवांशिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ भारत भूषण ने मुर्रा भैस और साहीवाल गाय पालने की सलाह दी। इस परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. रणवीर सिंह ने बताया कि इस कार्यशाला में फॉर्मर फर्स्ट प्रोग्राम के 154 किसानों को पूसा बासमती–1847 प्रजाति का 1008 किलोग्राम बीज रवितरण किया है इस कार्यशला में भाग लेने वाले सभी किसानों को गोबर एंव जैविक कचरे से स्वदेशी जय गोपाल केचुआ तकनीकी से केचुआ जैविक खाद तथा वर्मीकल्चर उत्पादन पर प्रशिक्षण दिया गया। किसानों को कृषि यंत्र जैसे सिंह हेन्ड हो, पावर स्प्रेयर, व्हील बेरौ, मल्टी सीड ड्रिल और विभिन्न सब्जियों को बोनें की मशीन का वितरण किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस पर किसानों को गुलाब के पौधो का वितरण किया गया इस कार्यशाला में बरेली छावनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री रविंद्र जी ने भूमि के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए कंपोस्ट के प्रयोग पर अधिक

जोर दिया। डॉ. केशव कुमार, उपनिदेशक, पशुपालन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार ने निराश्रित गोवंश को संरक्षण की उत्तर प्रदेश सरकार की नीति के बारे में बताया।
इस कार्यशाला के आयोजन में सहयोग श्री प्रेम शंकर, अंशु कनौजिया, और सूर्य प्रताप ने दिया।